राजस्थान विधान सभा की कार्यवाही का वृत्तान्त

अंक : 11] दसवीं विधान सभा के ग्यारहवें सत्र का पहला दिवस [संख्या : 1

सोमवार,

6 जुलाई, 1998

राजस्थान विधान सभा की बैठक 11.00 बजे विधान सभा भवन, जयपुर में प्रारम्भ हुई।

(श्री समर्थलाल मीणा, उपाध्यक्ष, पदासीन)

श्री मदन मोहन (खैरथल) : माननीय उपाध्यक्ष महोदय, जिस तरह से राज्य के अन्दर कानून और व्यवस्था की स्थिति बिगड़ी हुई है और जिस तरह से हरिजन और गरीब लोगों के साथ अन्याय हो रहा है....

श्री उपाध्यक्ष : वन्दे मातरम्।

राष्ट्र-गीत

(वन्दे मातरम्। वन्दे मातरम्।
सुजलाम सुफलाम्। मलयज शीतलाम्।
शस्य श्यामलाम् मातरम्। वन्दे मातरम्।
शुभ्र ज्योत्स्ना पुलकित यामिनी।
फुल्ल कुसुमित द्रुमदल शोभिनी।
सुहासिनी सुमधुर भाषिणी।
सुखदाम् वरदाम् मातरम्।
वन्दे मातरम्। वन्दे मातरम्)

सदन की मेज पर रखे जाने वाले पत्रादि। विशिष्ट सचिव, विधान सभा, उन विधेयकों का विवरण सदन की मेज पर रखेंगे जिन पर राष्ट्रपति महोदय/राज्यपाल महोदय की अनुमति प्राप्त हो चुकी है।

श्री बनवारीलाल बैरवा (निवाई) : उपाध्यक्ष महोदय, उनियारा पंचायत समिति के प्रधान के विरुद्ध अविश्वास प्रस्ताव में जबरदस्ती हमारे सदस्यों को उठाकर मुख्य.... (व्यवधान)

सदन की मेज पर रखे गये पत्र

अनुमति प्राप्त विधेयकों का विवरण

विशिष्ट सचिव, राजस्थान विधान सभा (श्री महेश सिंह तंवर) : उपाध्यक्ष महोदय, मैं उन विधेयकों का विवरण सदन की मेज पर रखता हूं जिन पर राष्ट्रपति महोदय अथवा राज्यपाल महोदय की अनुमति प्राप्त हो चुकी है।

राष्ट्रपति महोदय द्वारा अनुमति प्राप्त विधेयक

(1) राजस्थान सरकारी स्थान (अप्राधिकृत अधिभोगियों की बेदखली) (संशोधन) विधेयक, 1997.... (व्यवधान)

श्री रामस्वरूप मीणा (टोडाभीम) : उपाध्यक्ष महोदय, उनियारा पंचायत समिति के सदस्यों.... (व्यवधान)

श्री बनवारीलाल बैरवा : माननीय उपाध्यक्ष महोदय, मुख्य सचेतक जी ने पांच सदस्यों को अपने घर में बंद कर रखा है उनको मुक्त कराया जाए। (व्यवधान)

राज्यपाल महोदय द्वारा अनुमति प्राप्त विधेयक

श्री महेश सिंह तंवर : (1) राजस्थान विनियोग (लेखानुदान) (संख्या-2) विधेयक, 1998

(2) राजस्थान मंत्री वेतन (संशोधन) विधेयक, 1998.... (व्यवधान)

श्री बनवारीलाल बैरवा : उनको मुक्त कराइये। उपाध्यक्ष महोदय, पांच सदस्यों को उन्होंने बंद कर रखा है घर के अन्दर, उनको खुला छोड़ा जाए। (व्यवधान)

श्री महेश सिंह तंवर : (3) राजस्थान विधान सभा (अधिकारियों तथा सदस्यों की परिलब्धियां और पेंशन) (संशोधन) विधेयक, 1998

(4) राजस्थान विश्वविद्यालयों के अध्यापक तथा अधिकारी (नियुक्ति के लिए चयन) (संशोधन) विधेयक, 1998

श्री परसराम मदेरणा (नेता, प्रतिपक्ष) : सैक्रेटरी साहब, ठहरिये आप एक दफे।

श्री महेश सिंह तंवर : (5) राजस्थान विनियोग (संख्या-1) विधेयक, 1998

श्री परसराम मदेरणा : एक मिनट। मुख्य मंत्रीजी, ये कह रहे हैं कि उनियारा पंचायत के प्रधान के विरुद्ध जो अविश्वास की बात है उसमें कुछ सदस्यों को बंदी बना दिया गया है। इस प्रकार की कम्प्लेंट भी कर दी गयी है।

एक माननीय सदस्य : कहां बनाया गया है ?

श्री खेतसिंह राठौड़ (शेरगढ़) : चीफ व्हिप साहब के घर पर।

श्री परसराम मदेरणा : कहीं हो। मैं नहीं कहता कि उनके घर पर है कि दूसरी जगह है। है कि नहीं है। इसलिए, मुख्य मंत्रीजी, आप इस मामले को देख लीजिये। टुडे इज सोलेम ओकेजन, महामहिम राज्यपाल महोदय राजस्थान के थे....

श्री महावीर प्रसाद जैन (सरकारी मुख्य सचेतक) : उपाध्यक्ष महोदय, यह कहा है कि मेरे घर पर बंद है। मैं आपसे भी निवेदन करना चाहता हूं और प्रतिपक्ष के नेता से भी निवेदन करना चाहता हूं कि अभी ही दो लोगों को भेजें और यदि मेरे यहां कहीं पर भी कोई बन्धक मिले तो मैं आज ही इस्तीफा दे दूंगा। कहीं पर भी।

श्री मोहनलाल मोदी (नीमकाथाना) : दूसरी जगह भेज दिये होंगे।

श्री महावीर प्रसाद जैन : कुछ पता तो है नहीं।

सदन की सदस्यता से त्याग-पत्र

श्री एमादुद्दीन अहमद खां, सदस्य का सदन की सदस्यता से त्याग-पत्र

श्री उपाध्यक्ष : माननीय सदस्यों को सूचित करना है कि दसवीं राजस्थान विधान सभा के निर्वाचन क्षेत्र तिजारा जिला अलवर से निर्वाचित सदस्य श्री एमादुद्दीन अहमद खां ने राज्य सभा सदस्य निर्वाचित हो जाने के कारण गुरुवार, दिनांक 2 जुलाई, 1998 को राजस्थान विधान सभा सदन के अपने स्थान का त्याग कर दिया है और उनका त्याग-पत्र स्वीकार कर लिया गया है।

(श्री उपाध्यक्ष)

सदन की मेज पर रखे गये पत्र

अध्यादेश

राजस्थान आवासन बोर्ड, (संशोधन) अध्यादेश, 1998

श्री भंवरलाल शर्मा, प्रभारी मंत्री राजस्थान आवासन बोर्ड (संशोधन) अध्यादेश, 1998 (1998 का अध्यादेश संख्या-1) सदन की मेज पर रखेंगे।

श्री भंवरलाल शर्मा (नगरीय विकास एवं आवासन मंत्री) : उपाध्यक्ष महोदय, मैं राजस्थान आवासन बोर्ड (संशोधन) अध्यादेश, 1998 (1998 का अध्यादेश संख्या-1) सदन की मेज पर रखता हूं।

श्री रामनारायण चौधरी (मण्डावा) : उपाध्यक्ष महोदय, आज प्रश्नकाल कैसे हटा दिया आपने ? प्रश्नकाल कैसे हटाया ? प्रश्नकाल हटाने के क्या कारण हैं ?

श्री उपाध्यक्ष : कृपया विराजें। कृपया विराज जाएं।

श्री रामनारायण चौधरी (मण्डावा) : अब आप बताइये, मान्यवर, सदन को सूचना तो दीजिये कि आपने प्रश्नकाल क्यों हटाया।

श्री उपाध्यक्ष : माननीय सदस्य, विराजें। श्री गंगाराम चौधरी, प्रभारी मंत्री राजस्थान कृषि जोतों पर अधिकतम सीमा अधिरोपण (संशोधन) अध्यादेश, 1998 (1998 का अध्यादेश संख्या-2) सदन की मेज पर रखेंगे।

श्री रामनारायण चौधरी : आपने प्रश्नकाल हटाने का क्या कारण दिया, मान्यवर ? यह प्रश्नकाल का हमारा अधिकार है वह कैसे नहीं रखा ? इसका क्या कारण है ? सदन को सूचना दी जानी चाहिए कि आपने प्रश्नकाल कैसे हटा दिया।

राजस्थान कृषि जोतों पर अधिकतम सीमा अधिरोपण (संशोधन) अध्यादेश, 1998

श्री गंगाराम चौधरी (राजस्व मंत्री) : उपाध्यक्ष महोदय, मैं राजस्थान कृषि जोतों पर अधिकतम सीमा अधिरोपण (संशोधन) अध्यादेश, 1998 (1998 का अध्यादेश संख्या-2) सदन की मेज पर रखता हूं।

श्री उपाध्यक्ष : शोकाभिव्यक्ति।

श्री शांतिकुमार धारीवाल (हिण्डोली) : उपाध्यक्ष महोदय, मंत्रिमण्डल का विस्तार हुआ है इसलिए मुख्य मंत्रीजी को चाहिए कि सदन के सदस्यों से मंत्रियों का परिचय कराएं। यह तो आज का सबसे पहला काम होना चाहिए। मंत्रियों का परिचय तो करवाएं।

श्री दीपेन्द्रसिंह शेखावत (श्रीमाधोपुर) : दो ने त्याग-पत्र दिया था उनका क्या हुआ ?

श्री शांतिकुमार धारीवाल : सदन चल रहा है, 15-15 मंत्री और बना दिये गये और मंत्रियों का परिचय तक नहीं।

श्री लक्ष्मणसिंह रावत : सदन की परम्पराओं का हनन हो रहा है।

श्री परसराम मदेरणा : माननीय उपाध्यक्ष जी, उनियारा वाला मामला उठा लिया था लेकिन वास्तव में देखा जाए तो क्योंकि राजस्थान के जो महामहिम थे सरदार साहब, उनका स्वर्गवास हो गया,

(श्री परसराम मदेरणा)

निश्चित तौर पर उसकी सैंक्टिटी और गम्भीरता को रखते हुए ये आर्डिनेंस भी नहीं रखवाने चाहिए थे। इंट्रोडक्शन भी अभी नहीं करवा कर मुख्य मंत्रीजी बाद में ठीक समझेंगे तब करा लेंगे। अपन यहां पर शोकाभिव्यक्ति तो व्यक्त करते रहते हैं लेकिन आज यह विशेष तौर से राजस्थान राज्य के महामहिम का स्वर्गवास हुआ है, उनकी श्रद्धांजलि का अवसर है क्योंकि Governor is always a part of the Assembly. इसलिए मैं यह निवेदन कर रहा हूं....

श्री रामनारायण चौधरी : आपने प्रश्नकाल कैसे हटा दिया ?

श्री भैरोंसिंह शेखावत (मुख्य मंत्री) : छोड़ो, उसकी बाद में बात कर लेंगे।

श्री रामनारायण चौधरी : आप सुनिये तो सही।

श्री भैरोंसिंह शेखावत : सुन लिया। मुझे शोकाभिव्यक्ति राज्यपाल महोदय के प्रति प्रकट करनी है।

श्री रामनारायण चौधरी : क्या सुन लिया ? आप सुनिये। हमारे महामहिम चले गये, उनकी सैंक्टिटी में आप शोक प्रस्ताव रख रहे हैं। क्वेश्चन आवर आपने हटाया, यह हमको बताया जाना चाहिए था। लेकिन आपने सरकारी बिजनस रख दिया, आपने महामहिम की जो दिवंगत आत्मा है उसके प्रति असम्मान दिया। आप जो कुछ कह रहे हैं यह भी उनके प्रति एक असम्मान है।

शोकाभिव्यक्ति

राजस्थान के पूर्व राज्यपाल श्री दरबारा सिंह, उड़ीसा के पूर्व राज्यपाल श्री बिशम्भर नाथ पांडे, सिक्किम के पूर्व राज्यपाल श्री होमी जहांगीर एच. तलेयारखान, केरल के पूर्व मुख्य मंत्री श्री ई. एम. एस. नम्बूदिरीपाद, राजस्थान विधान सभा के पूर्व उपाध्यक्ष श्री यदुनाथ सिंह, राजस्थान सरकार के पूर्व मंत्री श्री गोपाल सिंह खण्डेला, पूर्व विधायक श्री लालूराम जी बैरवा, पूर्व विधायक श्री लाभचन्द जी बैद, पूर्व विधायक श्री राधाकृष्ण जी गोयल, पूर्व विधायक श्री वली मोहम्मद और गुजरात व पश्चिमी राजस्थान में चक्रवाती तूफान से गयी जानों के प्रति

श्री भैरोंसिंह शेखावत : ठीक है। उपाध्यक्ष महोदय, राजस्थान के पूर्व राज्यपाल श्री दरबारा सिंह, उड़ीसा के पूर्व राज्यपाल श्री बिशम्भर नाथ पांडे, सिक्किम के पूर्व राज्यपाल श्री होमी जहांगीर एच. तलेयारखान, केरल के पूर्व मुख्य मंत्री श्री ई. एम. एस. नम्बूदिरीपाद....

श्री चन्दनमल बैद (तारानगर) : माननीय उपाध्यक्ष महोदय, एक बात मैं निवेदन करना चाहता हूं। राजस्थान के राज्यपाल दरबारा सिंह जी के लिए जो शोकाभिव्यक्ति आप कर रहे हैं वह अलग होनी चाहिए और बाकी लोगों की अलग होनी चाहिए। उनका स्पेशल महत्व है इस वास्ते सब के साथ मिलाकर आप कर रहे हैं यह अच्छा नहीं है। एक उनका पहले कर दीजिये और फिर बाद में दूसरों का कीजिये।

श्री भैरोंसिंह शेखावत : अलग कर दूंगा लेकिन अब शुरू कर दिया तो सबके नाम बता दूं। केरल के पूर्व मुख्य मंत्री श्री ई.

(श्री भैरोंसिंह शेखावत)

एम. एस. नम्बूदिरीपाद, राजस्थान विधान सभा के पूर्व उपाध्यक्ष श्री यदुनाथ सिंह, राजस्थान सरकार के पूर्व मंत्री श्री गोपाल सिंह खण्डेला, पूर्व विधायक श्री लालूराम जी बैरवा, पूर्व विधायक श्री लाभचन्द जी बैद, पूर्व विधायक श्री राधाकृष्ण जी गोयल, पूर्व विधायक श्री वली मोहम्मद और 9–10 जून को अरब सागर में आये भीषण चक्रवाती तूफान ने गुजरात और पश्चिमी राजस्थान में जो तबाही मचाई, उसके कारण से जो जानें गई हैं, उन सब के प्रति मैं श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं और ईश्वर से प्रार्थना करता हूं कि ईश्वर उनकी आत्मा को शांति प्रदान करे। (व्यवधान)

श्री रतनलाल ताम्बी (जहाजपुर) : उपाध्यक्ष महोदय, पूर्व सदस्य, जहाजपुर श्री रामदयाल उपाध्याय जी का देहान्त हुआ, उनका कहीं नाम ही नहीं है इसमें।

श्री भैरोंसिंह शेखावत : उपाध्यक्ष महोदय, श्री दरबारा सिंह जी ने एक मई, 1998 को राजस्थान के राज्यपाल के रूप में शपथ ग्रहण की थी, 24 मई, को उनका स्वर्गवास हो गया। मैं ऐसा समझता हूं कि कि राज्यपाल के पद पर रहते हुए यह इस प्रकार की दुःखद घटना पहली बार हुई है। जिस समय उन्होंने राज्यपाल की शपथ ग्रहण की थी, उस समय उनके मन में भी राजस्थान के विकास की दृष्टि से बहुत उमंगें थीं। थोड़े से दिनों में ही मेरा उनसे जिस प्रकार का सम्पर्क हुआ, उस सम्पर्क में उन्होंने एक बार मुझे पूछा कि मुझे राजस्थान में किन बातों पर विशेष ध्यान देना चाहिए। मैंने कहा कि आपके जो संवैधानिक अधिकार हैं उन अधिकारों का तो आप प्रयोग करेंगे ही लेकिन राजस्थान के किस विषय में आपकी विशेष रुचि हो सकती है, उस रुचि के अनुसार किस प्रकार से कार्यक्रम बनाया जा सकता है, उसके बारे में भी आप बात करें। उन्होंने कहा कि एक तो चांसलर के रूप में मेरे अधिकार हैं। मैंने कहा कि चांसलर के रूप में यदि आप अधिकारों का उपयोग करेंगे तो मुझे किसी प्रकार की आपत्ति नहीं होगी। मुझे बहुत खुशी होगी कि आप अपने अनुभव के आधार पर विश्वविद्यालय की स्थिति में सुधार लाने का प्रयत्न करें। उन्होंने कहा कि यह जिम्मेदारी मैं अपने ऊपर लेता हूं। लेकिन उनका खुद का कहना था कि मैं दूसरा काम राजस्थान में करना चाहता हूं कि राजस्थान में कृषि का उत्पादन किस प्रकार से बढ़े, सिंचाई सिस्टम मे किस प्रकार से सुधार हो और उसके साथ विपणन व्यवस्था में किस प्रकार से सुधार किया जाए। लेकिन उन्होंने कहा कि मैं एक्सपर्ट हूं एक बात का कि कृषि आधारित उद्योग किस प्रकार से कायम किये जा सकते हैं। मैंने अपने क्षेत्र में और अपने स्वयं के कई प्रकार के कृषि आधारित उद्योग चालू किये हैं और मैं उनमें कामयाब हुआ हूं। उसको देखकर पंजाब में और स्थानों पर खेत के साथ ही उद्योग स्थापित करने की एक प्रवृत्ति चली है और उसके कारण से पंजाब में कृषि आधारित उद्योग काफी संख्या में लग रहे हैं। मैं उनके दाह-संस्कार में गया तो दाह-संस्कार के समय उनके घर में और खेत में मैंने देखा, खेत के पास में ही इस प्रकार के उद्योग उन्होंने लगा रखे थे। पास में ही थे इसलिए मैं देखने चला गया। फिर मुझे वहां जानकारी दी गई कि पहले व्यक्ति हैं जिन्होंने आलू की खेती और चावल की खेती में इस प्रकार के प्रयोग किये हैं जिससे उत्पादन बढ़े और

(6)

(श्री भैरोंसिंह शेखावत)

इसके कारण से उद्योग स्थापित हों। मुझे बताया गया कि उन्होंने अपने सारे संबंधियों को इस बात की सलाह दी कि वे और खेती छोड़ें और आलू की खेती ज्यादा से ज्यादा करें। आलू की खेती में उन्होंने अपने आपमें एक एक्सपर्टाइज हासिल कर लिया था जिसके कारण से पंजाब की सारी स्थिति में उत्पादन की दृष्टि से बहुत सुधार हुआ।

मैं ऐसा समझता हूं कि वे विनम्र स्वभाव के व्यक्ति थे। गवर्नर जरूर बन गये लेकिन उनके स्वभाव से, बातचीत से यह कभी अहसास नहीं होता था कि ये गवर्नर साहब हैं। लोगों से मिलना-जुलना और सबसे खुलकर बात करना, यह उनका स्वभाव था। इस प्रकार के व्यक्ति से जब मेरी बात हुई तो मैंने उनसे कहा कि आप इस बात की चिन्ता छोड़िये कि आप केवल राज्यपाल हैं, आप इस बात की चिन्ता करिये कि कृषि क्षेत्र में या बाकी के क्षेत्रों में आप किस प्रकार से विकास में हमें आगे बढ़ा सकते हैं। उस दृष्टि से जो भी आपका मार्ग-निर्देशन होगा उस निर्देशन के आधार पर हम काम करेंगे। वे भी इससे बड़े खुश हुए। उन्होंने कागज मंगवाना भी शुरू कर दिया और हमने भी उनके पास कागज भेजना शुरू कर दिया कि जल्दी से जल्दी यदि इस प्रकार के क्षेत्र में हम प्रगति कर सकें या सुधार कर सकें तो बहुत अच्छी बात होगी। लेकिन ईश्वर को मंजूर इतना ही था कि 24 मई को उनका देहांत हो गया। मैं चाहता हूं सदन भी उनके प्रति अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करे और उपाध्यक्ष महोदय की अनुमति से और जैसा बैदजी ने कहा, उनकी अलग से यदि श्रद्धांजलि अर्पित कर दी जाए तो मुझे कोई आपत्ति नहीं होगी।

श्री परसराम मदेरणा (नेता, प्रतिपक्ष): माननीय उपाध्यक्ष महोदय, राजस्थान के पूर्व राज्यपाल सरदार दरबारा सिंह जी का शोकाभिव्यक्ति का प्रस्ताव सदन के नेता ने प्रस्तुत किया, उसका मैं समर्थन करता हूं।

सरदार साहब मैकेनिकल इंजीनियरिंग के स्नातक थे और उन्होंने अपना प्रारम्भिक जीवन जिला परिषद के एक सदस्य की हैसियत से प्रारम्भ किया। वे दो बार पंजाब विधान सभा के सदस्य रहे। वे पंजाब के उप मंत्री भी रहे और पंजाब विधान सभा के अध्यक्ष भी रहे। वे जब पंजाब विधान सभा के अध्यक्ष थे तो अन्तरराष्ट्रीय संसदीय सम्मेलन में उन्होंने चार देशों की यात्रा की। वे 11वीं लोक सभा के भी सदस्य थे। उनकी रुचि विशेष तौर से शिक्षा और सामाजिक कार्यों में थी और यांत्रिक कृषि में वे एक्सपर्ट थे। शिक्षा के क्षेत्र में उन्होंने अपनी खुद की कांस्टीट्यूएंसी नकोदर में छात्र और छात्राओं के दो अलग-अलग कालेज खोले। मुख्य मंत्रीजी उनके क्षेत्र में गये हैं, वे उनके संस्थापक अध्यक्ष थे। केवल शिक्षा के क्षेत्र के प्रसार में ही उन्होंने पहल नहीं की, वे खेल के भी बहुत निकट थे। अपने समय में कालेज के अन्दर वे फुटबाल और वालीबाल के केप्टेन भी थे और खेल के प्रति उनका विशेष आकर्षण था।

उपाध्यक्ष महोदय, उन्होंने अपने सार्वजनिक जीवन और पंजाब के प्रशासन में, राजस्थान में तो वे 25 दिन राज्यपाल के पद पर रह सके लेकिन वहां बड़ी महत्वपूर्ण

(श्री परसराम मदेरणा)

भूमिका का बहुत ही दक्षता से और कुशलता से निर्वाह किया। उन्होंने सादगी, मिलनसारिता, शिक्षा प्रसार, खेलों से घनिष्ठ लगाव की अमिट छाप भी छोड़ी है। सरदार साहब पंजाब के चहुंमुखी विकास के लिए जीवन भर संघर्षरत रहे। यह विधि की विडम्बना है कि एक मई को उन्होने राजस्थान के राज्यपाल का पद ग्रहण किया और 24 मई को अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान में उनका हृदय गति रुक जाने से स्वर्गवास हुआ।

श्री राजेन्द्र पारीक (सीकर) : लू की चपेट में आने से हुआ।

श्री परसराम मदेरणा : नहीं, वे 20 तारीख को भारत के प्रधानमंत्री के साथ अणु परीक्षण के स्तर का जब अवलोकन करने आये थे, वे वहां पहुंचे। निश्चित रूप से उसी दिन उनके स्वास्थ्य पर विपरीत प्रभाव पड़ा था, हालांकि आने के बाद में एक दिन यहां रहे। फिर उनको मेडिकल इंस्टीट्यूट में भर्ती कराया गया। यह राजस्थान के लिए बहुत दुःखद घटना थी।

उपाध्यक्ष महोदय, मैं कांग्रेस विधायक दल की ओर से, अपनी ओर दिवंगत आत्मा को श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं और ईश्वर से प्रार्थना करता हूं कि उनकी आत्मा को चिर शांति प्रदान करे और उनके परिवारजन को इस बिछोह को सहन करने की शक्ति दे।

श्री फतेह सिंह (नेता, जनता दल) : उपाध्यक्ष महोदय, आज इस हाउस में सदन के नेता ने जो शोक प्रस्ताव रखा है उसका मैं समर्थन करता हूं। श्री दरबारा सिंह जी राजस्थान के राज्यपाल रहे और इसके पूर्व में इन्होंने अन्य स्थानों पर रह कर इस देश को सेवाएं दीं, अच्छे काम किये। कम समय में यहां से उनका जो स्वर्गवास हुआ है, मैं तो यही कामना करूंगा कि उनके कार्यकाल में जो काम उन्होंने अधूरे छोड़े हैं, उनके जो सपने अधूरे थे उन सपनों को आगे पूरा किया जाए। मैं ईश्वर से यह प्रार्थना करता हूं कि उनकी आत्मा को शांति दे और उनके परिवार को इस दुःख को सहन करने की शक्ति प्रदान करे।

श्री अमराराम (धोद) : उपाध्यक्ष महोदय, सदन के नेता महोदय ने राजस्थान के पूर्व राज्यपाल श्री दरबारा सिंह जी के असामयिक निधन पर जो शोकाभिव्यक्ति का प्रस्ताव रखा है उसमें अपने आप को शामिल करता हूं। उनके जीवन पर सदन के नेता और प्रतिपक्ष के नेता महोदय ने जैसा कहा, सार्वजनिक जीवन में कृषि, खेल और शिक्षा में उन्होंने बहुत बड़ा योगदान पंजाब और देश को दिया है। वे आज हमारे बीच में नहीं रहे हैं उनके प्रति मैं शोक प्रकट करता हूं और आशा करता हूं कि जो प्रकृति ने उनके परिवार को शोक दिया है उसको सहन करने की शक्ति प्रदान करे।

श्री शिवनाथ सिंह (गुढ़ा) : उपाध्यक्षजी, सरदार दरबारा सिंहजी राजस्थान के गवर्नर बन कर आये, एक जमीन से जुड़ा व्यक्ति राजस्थान को मिला। यहां के सभी लोग बहुत आशाएं उनसे रखते थे। जैसा माननीय मुख्य मंत्रीजी ने कहा, राजस्थान के

(श्री शिवनाथ सिंह)

बहुमुखी विकास में उनकी दिलचस्पी थी और उन्होंने काम करना शुरू किया। यह हमारा दुर्भाग्य है, राजस्थान का दुर्भाग्य है और खास तौर से किसान वर्ग का दुर्भाग्य हैं कि ऐसे व्यक्ति की सेवाएं राजस्थान को पूर्ण रूप से नहीं मिल पाई और 24 दिन के अन्दर ही भगवान ने उनको हमसे छीन लिया। दरबारा सिंहजी एक ऐसे व्यक्ति थे जिन्होने जहां भी उनको काम करने का अवसर मिला, अपनी छाप छोड़ी। पंजाब विधान सभा के वे अध्यक्ष रहे, भिन्न-भिन्न पदों पर रहे और जहां उनको काम करने का समय मिला उन्होंने अपनी विशिष्टता वहां बतलाई। माननीय उपाध्यक्ष जी, दरबारा सिंहजी के स्वर्गवास से हमें क्षति हुई है, राजस्थान को क्षति हुई है और वह क्षति अपूरणीय है। मैं दिवंगत आत्मा के प्रति अपने सभी साथियों की ओर से श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं और भगवान से प्रार्थना करता हूं कि उस दिवंगत आत्मा को शांति प्रदान करे।

श्री उपाध्यक्ष : माननीय सदस्यगण, शोकाभिव्यक्ति के इस अवसर पर इस सदन में माननीय सदन के नेता, प्रतिपक्ष के नेता, अन्य दलों के नेताओं एवं सदस्यों ने राजस्थान के राज्यपाल श्री दरबारा सिंह जी के बारे में जो शोक प्रस्ताव प्रस्तुत किया है और संवेदना व्यक्त की है उसमें मैं अपने आप को भारी दिल से सम्मिलित करता हूं।

राजस्थान के राज्यपाल श्री दरबारा सिंह जी का जन्म 25 फरवरी, 1927 को पाकिस्तान के लायलपुर जिले के चक नम्बर 26 जे.बी. में हुआ। आपने खालसा कालेज, लायलपुर तथा इंजीनियरिंग कालेज, रूड़की से शिक्षा ग्रहण कर मैकेनिकल इंजीनियर की उपाधि प्राप्त की। आपने वर्ष 1942 के 'भारत छोड़ो' आन्दोलन में सक्रिय रूप से भाग लिया। आप वर्ष 1967 से 1977 तक दो बार पंजाब विधान सभा के सदस्य रहे। पहले कार्यकाल के दौरान आप वर्ष 1968-69 में पंजाब सरकार में उप मंत्री तथा दूसरे कार्यकाल के दौरान वर्ष 1969 से 1973 तक पंजाब विधान सभा के अध्यक्ष पद पर आसीन रहे। श्री दरबारा सिंह जी वर्ष 1996 में ग्यारहवीं लोक सभा के लिए जालंधर क्षेत्र से शिरोमणी अकाली दल के सांसद निर्वाचित हुए।

आपने 1 मई, 1998 को राजस्थान के राज्यपाल के रूप में शपथ ग्रहण की तथा 24 दिन तक इस पद पर आसीन रहे।

शिक्षा एवं सामाजिक कार्यों के प्रति लगाव रखने वाले श्री दरबारा सिंह जी दो अलग-अलग कालेजों के संस्थापक अध्यक्ष भी रहे। आपने आस्ट्रेलिया, ब्रिटेन और वेस्टइंडीज सहित अनेक देशों की यात्राएं कीं।

श्री दरबारा सिंह जी के आकस्मिक निधन से देश व प्रदेश के राजनीतिक क्षेत्र में ही नहीं, वरन् सामाजिक एवं प्रशासनिक क्षेत्र में भी एक अपूरणीय क्षति हुई है। आपने राष्ट्रीय प्रगति के लिए जो योगदान दिया वह आज की पीढ़ी के लिए प्रेरणास्पद ही नहीं, अनुकरणीय भी है। आपने अल्प समय में ही अपनी सादगी, सद्भाव, मानवीयता, मृदु व्यवहार से प्रदेशवासियों

(श्री उपाध्यक्ष)

के दिलों में भी एक विशिष्ट स्थान बना लिया था। गरीब और शोषित वर्ग के हितों के लिए किये गये कल्याणकारी कार्यों के लिए आपको लम्बे समय तक याद रखा जाएगा। श्री दरबारा सिंहजी का दिल का दौरा पड़ने से दिनांक 24 मई, 1998 को निधन हो गया।

मैं माननीय सदस्यों से निवेदन करूंगा कि दो मिनट के लिए मौन खड़े रह कर दिवंगत आत्मा की शांति के लिए प्रार्थना करें।

(तदनन्तर सदन ने दो मिनट मौन खड़े रह कर दिवंगत आत्मा को श्रद्धांजलि अर्पित की)

श्री भैरोंसिंह शेखावत (मुख्य मंत्री) : उपाध्यक्ष महोदय, उड़ीसा के पूर्व राज्यपाल श्री बिशम्भर नाथ पाण्डे का जन्म 23 दिसम्बर, 1996 को मध्य प्रदेश के छिंदवाड़ा जिले के उमरेठ कस्बे में हुआ। आप 1983 से लेकर 1988 तक उड़ीसा के राज्यपाल के पद पर आसीन रहे और उसके पश्चात् कई वर्षों तक राज्य सभा के सदस्य रहे। उपाध्यक्ष महोदय, उनको पद्मश्री से भी सम्मानित किया गया। स्वतंत्रता के आन्दोलन में उन्होंने भाग लेकर एक प्रखर आन्दोलनकारी के रूप में अपने आपको प्रकट किया। 1 जनवरी, सन् 1998 को उनका निधन हो गया, इसका हम सबको दुःख है। दुःख इस बात का है कि जिन्होंने आन्दोलन में भाग लिया और लगभग सामाजिक सेवा और राजनीतिक क्षेत्र में अपनी प्रभावी भूमिका निभाते रहे, शनैः-शनैः इस प्रकार की पुरानी पीढ़ी के लोग हमारे यहां से जा रहे हैं। मैं उनकी आत्मा को शांति मिले, इस बात की ईश्वर से प्रार्थना करता हूं और उनके शोक-संतप्त परिवार को इस दुःख को सहन करने की शक्ति मिले, इसकी ईश्वर से प्रार्थना करता हूं।

उपाध्यक्ष महोदय, सिक्किम के पूर्व राज्यपाल श्री होमी जे. एच. तलेयारखान का जन्म 9 फरवरी, 1927 को बम्बई में हुआ। आपने बी. ए. की उपाधि प्राप्त की। गांधीवादी विचारधारा के आप पोषक थे। समाज सुधार और पर्यावरण सुधार में आपकी विशेष रुचि थी। उनका निधन भी 27 जून, 1998 को हो गया। उनके प्रति भी मैं अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं और उनके शोक-संतप्त परिवार को ईश्वर इस दुःख को सहन करने की शक्ति प्रदान करे, इस प्रकार की प्रार्थना करता हूं।

उपाध्यक्ष महोदय, केरल के पूर्व मुख्य मंत्री श्री ई. एम. एस. नम्बूदिरीपाद, इस व्यक्ति के जीवन से हिन्दुस्तान का हर व्यक्ति परिचित है। योग्यता की दृष्टि से परिचित है, जनता में किस प्रकार से काम लिया जाए व जनता को किस प्रकार से जागृत किया जाए, इस सम्बन्ध में भी उनकी कार्य-प्रणाली से हिन्दुस्तान का बच्चा-बच्चा परिचित है। वैचारिक दृष्टि से उस व्यक्ति का जिन विचारों के प्रति कमिटमेंट था। उस कमिटमेंट में किसी प्रकार का परिवर्तन हो जाए, यह नम्बूदिरीपाद से कोई अपेक्षा नहीं कर सकता था। बातचीत में सरल, दिखने में सरल लेकिन वैचारिक दृष्टि से कोई चर्चा शुरू कर दी जाए तो नम्बूदरीपाद

(10)

(श्री भैरोंसिंह शेखावत)

कोई संकोच इस बात का नहीं करते थे कि मेरे सामने बैठने वाले या मेरे से बात करने वाले के दिमाग को मैं प्रभावित नहीं कर सकूंगा। एक कन्विक्शन था। कन्विक्शन इस बात का कि मैं जिस बात को मानता हूं उस बात को मैं खुले रूप से कहूं और अगले को समझ में नहीं आयी तो ठीक प्रकार से समझाऊं।

जब वे मुख्य मंत्री बने उस समय उन्होंने राज्य में कई प्रकार के अभिनव प्रयोग किये थे। शिक्षा के क्षेत्र में भी किये तथा और क्षेत्रों में भी उन्होंने इस प्रकार के परिवर्तन लाकर केरल का विकास करने की एक नींव रखी थी। आज वह व्यक्ति हमारे बीच से चला गया, 19 मार्च, 1998 को उनका निधन हो गया। यह सदन उनके प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करता है और उनके शोक-संतप्त परिवार को शांति मिले इसके लिए ईश्वर से प्रार्थना करता है।

उपाध्यक्ष महोदय, इसी सदन के उपाध्यक्ष श्रीमन् यदुनाथ सिंह जी का 15 जून, 1944 को भरतपुर जिले के कासगंज गांव में जन्म हुआ था। यदुनाथ सिंह जी का निधन 7 अप्रेल, 1998 को हो गया। उस व्यक्ति के बारे में क्या कहूं? ऐसा हंसमुख व्यक्ति। राजनीति में मुंह सुजाए तो बहुत रहते हैं लेकिन किसी भी परिस्थिति में उस आदमी से आप बात-चीत कर लें उसके दिमाग में जैसे टैन्शन नाम की कोई चीज ही नहीं हो। कई बार जब भी उनसे मिलना होता तो नयी-नयी बातें कह कर वे लोगों को प्रभावित करते थे। साधारण परिवार में जन्म लेकर उस व्यक्ति ने असाधारण प्रकृति प्राप्त की थी। इसके लिए आज उनको राजस्थान और उनका क्षेत्र याद करेगा। उनके प्रति मैं श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं और उनके शोक-संतप्त परिवार को इस दारुण दुःख को सहन करने की शक्ति प्रदान करे, इसकी ईश्वर से प्रार्थना करता हूं।

श्री गोपाल सिंह जी खण्डेला मेरे ही जिले के रहने वाले थे। गोपाल सिंह जी खण्डेला बहुत वर्षों से गांवों में किसानों के लिए और ग्रामीण विकास के लिए निरन्तर काम करते रहे। इस सदन के सदस्य रहे, मंत्री भी रहे। जिस प्रकार की उनकी अध्ययन करने की एक रुचि थी उसके कारण वे कई मसलों के अन्दर जिस समय भी सदन में चर्चा होती, अपना योगदान करते रहे। उनका निधन भी 24 मार्च, 1998 को हो गया। मैं उनके प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं और साथ ही उनके शोक-संतप्त परिवार को इस दुःख को सहन करने की शक्ति प्रदान करे, इसके लिए ईश्वर से प्रार्थना करता हूं।

पूर्व विधायक श्री लालूराम जी बैरवा का जन्म 1 जनवरी, 1925 को टौंक में हुआ। आपने दरबार हाई स्कूल, टौंक से मैट्रिक की शिक्षा प्राप्त की। आप 1952 से 1962 तक पहली व दूसरी राजस्थान विधान सभा में टौंक निर्वाचन क्षेत्र के विधायक रहे। विधायक रहते समय वे अपने क्षेत्र के विकास के कामों में बहुत रुचि रखते थे। लालूराम जी बैरवा का निधन 21 मार्च, 1998 को हो गया। मैं उनके प्रति अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं और उनके शोक-संतप्त परिवार को इस दुःख को सहन करने

(श्री भैरोंसिंह शेखावत)

की शक्ति प्रदान करे, इस रूप में ईश्वर से प्रार्थना करता हूं।

पूर्व विधायक श्री लाभचन्द जी बैद का 4 अप्रेल, 1998 को स्वर्गवास हो गया। लाभचन्द जी से मेरे राजनीतिक रिश्ते नहीं पारिवारिक से रिश्ते थे। उनके स्वभाव से मैं परिचित था। स्वभाव में कई बार क्रोध भी आता था लेकिन क्रोध खतम होते ही स्वभाव में आत्मीयता कितनी थी इसका अनुमान तो वे ही लोग लगा सकते थे जिनका उनसे सम्बन्ध रहा है। उस प्रकार का व्यक्ति यहां हमारे बीच से उठ गया, हमको इसकी बहुत क्षति हुई है। मैं उनकी आत्मा की शांति के लिए श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं और उनका शोक-संतप्त परिवार इस दुःख को सहन करे, इस रूप में ईश्वर से प्रार्थना करता हूं।

पूर्व विधायक श्री राधाकृष्ण गोयल का जन्म 1928 में सवाईमाधोपुर में हुआ। श्री राधाकृष्ण गोयल तृतीय राजस्थान विधान सभा में टोंक से स्वतंत्र पार्टी के विधायक निर्वाचित हुए। श्री गोयल जितने भी लेजिस्लेटिव वर्क यहां होते थे उनमें बहुत रुचि लेते थे। किसी भी प्रकार का कानून बने वे उस कानून में अपनी राय देते थे कि कानून में किस प्रकार से सुधार किया जा सकता है। इसलिए वे जीरो आवर के बाद के सदस्य माने जाते थे जो रचनात्मक कामों पर विचार करते और अपने सुझाव इस प्रकार से देते थे। उनके प्रति मैं भी अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं और उनका शोक-संतप्त परिवार इस दुःख को सहन करे, इसके लिए ईश्वर से प्रार्थना करता हूं।

पूर्व विधायक श्री वली मोहम्मद द्वितीय राजस्थान विधान सभा 1957 से 1962 तक बाड़मेर जिले के चौहटन निर्वाचन क्षेत्र से कांग्रेस पार्टी के विधायक रहे। जनसाधारण में आर्थिक, सामाजिक और राजनीतिक चेतना जागृत करने के लिए सतत् प्रयत्नशील रहे। उनका निधन 3 मई, 1998 को हो गया। मैं उनके प्रति भी अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं। ईश्वर से प्रार्थना करता हूं कि उनके शोक-संतप्त परिवार को इस दुःख को सहन करने की शक्ति प्रदान करे।

उपाध्यक्ष महोदय, 9–10 जून, 1998 को अरब सागर में आये तूफान के कारण गुजरात और राजस्थान में काफी क्षति हुई है। उसमें धन की क्षति हुई है लेकिन उसके साथ जनहानि बहुत ज्यादा हुई है। कई लोग उसमें मारे गये, कइयों का अभी तक पता भी नहीं लग रहा है। ऐसे ज्ञात-अज्ञात उन सारे मृतकों के प्रति मैं अपनी तरफ से श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं। ईश्वर से प्रार्थना करता हूं कि उनकी आत्मा को शांति मिले और उनके शोक-संतप्त परिवारों को इस दुःख को सहन करने का साहस मिले।

इन्हीं शब्दों के साथ यह प्रस्ताव मैं सदन के सामने रखता हूं।

श्री रामेश्वर लाल चौधरी (नावां) : उपाध्यक्ष महोदय, हमारे नागौर जिले के एक माननीय सदस्य का भी देहान्त हुआ है उनके लिए भी श्रद्धांजलि अर्पित की जाए।

श्री रतनलाल ताम्बी (जहाजपुर) : उपाध्यक्ष महोदय, मैं आपका ध्यान आकर्षित करना चाहूंगा कि प्रथम राजस्थान विधान सभा के जहाजपुर से निर्वाचित सदस्य

(श्री रतनलाल ताम्बी)

श्री रामदयाल जी उपाध्याय का 22-23 मई को देहान्त हुआ है। प्रशासन ने इसकी सूचना शायद आपको नहीं दी, वह मैं देना चाहता हूं।

श्री परसराम मदेरणा (नेता, प्रतिपक्ष) : माननीय उपाध्यक्ष जी, मुख्य मंत्रीजी ने जो प्रस्ताव रखा है शोकाभिव्यक्ति का, मैं उसमें अपने दल की भावनाओं को सम्मिलित करता हूं।

श्री विशम्भर नाथ जी पाण्डे एक प्रखर स्वाधीनता आंदोलन के अग्रणी थे। 1921 में नॉन-कोआपरेशन मूवमेंट जो गांधीजी ने चलाया था, वे गांधीजी के अनन्य भक्त थे, उसमें उन्होंने हिस्सा लिया। 8 बार उनको सजा हुई और वे बंदीगृह में 10 साल तक रहे। ऐसे राष्ट्र भक्त स्वतन्त्रता आंदोलन में ही नहीं रहे बल्कि उत्तर प्रदेश विधान सभा के भी वे सदस्य रहे और विधान परिषद के भी सदस्य रहे। दो बार राज्य सभा के भी सदस्य रहे। बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी श्री पाण्डे जी सामाजिक, राजनीतिक और शैक्षणिक संस्थाओं के प्रमुख पदों पर भी रहे। भारत के राष्ट्रपति जी ने उनकी उल्लेखनीय सेवाओं के लिए पद्मश्री और साम्प्रदायिक सामंजस्य के लिए 'खुदाबख्श' पुरस्कार से सम्मानित किया। उपाध्यक्ष महोदय, उनकी विद्वता के फलस्वरूप 1992 में जापान के सोका विश्वविद्यालय ने उनको डाक्टर की उपाधि से सम्मानित किया। इसके साथ ही फोर कम्युनल हारमनी और गांधी स्मृति व दर्शन स्मृति के उपाध्यक्ष भी रहे। श्री पाण्डे जी गांधीवादी विचारों से प्रेरणा लेकर 45 पुस्तकें लिखीं। वे उच्च कोटि के विद्वान थे। उन्होंने धर्म, साहित्य और संस्कृति पर अनेक देशों के साहित्य की रचना की जो राष्ट्रीयन रिलीजन, इरानियन कल्चर, हिस्ट्री आफ इजिप्शियन सिविलाइ-जेशन, इस्लामिक कल्चर, कल्चरल यूनिटी एण्ड गांधी जी आदि उनकी प्रमुख पुस्तकें प्रकाशित हुयीं। साम्प्रदायिक सद्भाव और हिन्दू-मुस्लिम एकता की दिशा में श्री पांडेजी ने उल्लेखनीय कार्य किये। ऐसे स्वतंत्रता सेनानी हमारे बीच में इंटर सैशन पीरियड में नहीं रहे।

श्री होमी जे. एच. तलेयारखान स्वतन्त्रता सेनानी थे। वे चार बार महाराष्ट्र विधान सभा के सदस्य भी निर्वाचित हुए। 1962 में मुझे ऊटी की एक कान्फ्रेंस में उनके साथ सम्मिलित होने का अवसर मिला और उन्होंने टूरिजम के डवलपमेंट के लिए जो अपने विचार व्यक्त किये उनका उस कौंसिल में भारी असर और प्रभाव रहा। लीबिया में ये भारत के राजदूत भी रहे। वे सिक्किम के राज्यपाल भी थे। समाज सुधार के मामले में वे हमेशा गहरी रुचि रखते थे। वे भी हमारे बीच में नहीं रहे।

श्री ई. एम. एस. नम्बूदिरीपाद अपने आप में ही एक संस्थान थे। वे गांव में पैदा हुए केरल के दक्षिणी मालाबार के छोटे से गांव में। और बचपन की 12 साल उम्र में ही भारतीय राजनीतिक सम्मेलन में उन्होंने हिस्सा लिया था। हालांकि अन्त में वे मार्क्सिस्ट कम्युनिस्ट पार्टी की स्थापना करने वाले संस्थापक थे लेकिन 1934 में वे कांग्रेस में सम्मिलित हो गये और केरल प्रांतीय कांग्रेस समिति के महासचिव रहे। वे अखिल

(श्री परसराम मदेरणा)

भारतीय कांग्रेस कमेटी के भी सदस्य रहे। वे मद्रास विधान सभा के भी सदस्य रहे। मार्क्सवाद का गम्भीरता और गहराई से अध्ययन किया और उससे प्रभावित होकर उन्होंने केरल राज्य में कम्युनिस्ट पार्टी की स्थापना की। प्रखर बौद्धिक क्षमता और सक्रियता के कारण जल्दी ही कम्युनिस्ट आन्दोलन से वे राष्ट्र नेता के रूप में उभरे। 1964 में जब कम्युनिष्ट पार्टी का डिवीजन हुआ सी. पी. आई. और सी. पी. एम., तो वे सी. पी. एम. के महामंत्री थे। वहां पर सर्वेसर्वा अध्यक्ष नहीं होता है। करीबन 90 साल की उन्होंने उम्र पाई। प्रखर पत्रकार और विद्वतता का उनसे उदाहरण मिलता है। उनको अंग्रेजी, मलयालम और संस्कृत भाषा का अच्छा ज्ञान था और उन्होंने इसमें किताबें भी लिखीं। वे एक प्रखर पत्रकार भी थे। वे दो बार मुख्य मंत्री भी रहे—एक बार 1957 में और एक बार 1967 में। उस समय सी. पी. एम. के थे, पहले सी. पी. आई. के थे। कम्युनिस्ट काडर का सांगठनिक ढांचा खड़ा करने में उनका पूर्ण योगदान रहा। जब उनका 19 मार्च को निधन हुआ तो 20 मार्च के अखबारों में यह बात आई कि इस आयु में भी वे प्रतिदिन सी. पी. एम. के ऑफिस में जाकर बैठते थे और वहां पर पार्टी के लोगों का मार्ग-निर्देशन करते थे। वे हमारे बीच में नहीं रहे।

श्री यदुनाथ सिंहजी, जैसा कि मुख्य मंत्रीजी ने कहा एक जानदार व्यक्ति थे। वे तीन बार विधान सभा के सदस्य रहे। वे विधान सभा के उपाध्यक्ष भी रहे जहां पर अभी आप इसको सुशोभित कर रहे हैं। वे जनता दल के सचेतक भी रहे। वे किसानों के हितों के लिये और जनसाधारण की आर्थिक, सामाजिक और राजनैतिक चेतना जागृत करने में संघर्षरत रहे। बहुत पीड़ा हुई वे हमारे बीच में नहीं रहे।

श्री गोपाल सिंह (खण्डेला) तीन बार विधान सभा के सदस्य रहे। पंचायत समिति, खण्डेला के प्रधान भी रहे और राजस्थान सरकार में राज्य मंत्री भी रहे। रहे थोड़े अर्से के लिये। जनता दल का बाद में विभाजन हो गया था। लेकिन वे इस सदन की कमेटियों के सदस्य और प्राक्कलन समिति के सभापति भी रहे थे। वे कृषि के विकास में विशेष रूचि रखते थे और गेहूं के उन्नत बीज का उत्पादन कर राज्य स्तरीय प्रतिस्पर्धा में उन्होंने प्रथम स्थान प्राप्त किया था। वे सामाजिक, शैक्षणिक संस्थाओं से जीवनभर जुड़े रहे। वे भी हमारे बीच में नहीं रहे।

श्री लालू रामजी बैरवा दो बार विधान सभा के सदस्य रहे। वे पिछड़ी जातियों और दलितों के उत्थान के लिये हमेशा सक्रिय रहे। दलित जातीय संघ के वे सदस्य भी थे। विधान सभा में यह उनकी महत्वपूर्ण भूमिका रही। वे हमारे बीच में नहीं रहे।

श्री लाभचन्द जी बैद एक बार विधान सभा के सदस्य थे और इस सदन में अपने क्षेत्र की समस्याओं को समाधान के लिये उठाने में उनकी विशेष तौर से महत्वपूर्ण भूमिका रही। वे एक निष्ठावान सदस्य थे

(14)

(श्री परसराम मदेरणा)

और तीन वर्ष तक वे भारतीय जनसंघ के जिले के अध्यक्ष भी रहे। वे भी हमारे बीच में नहीं रहे।

श्री राधाकृष्ण जी गोयल हालांकि एक बार ही विधान सभा के सदस्य रहे लेकिन विधान सभा के लैजिस्लेटिव बिजनस में, मैं भी उन दिनों इस सदन में उपस्थित था और विनियोग विधेयक का मैं प्रभारी मंत्री था, उसमें वे कई प्रकार के अमैंडमैंट दिया करते थे। वे को-आपरेटिव आंदोलन में जिला सहकारी संघ के अध्यक्ष भी रहे। खास तौर से धार्मिक कार्यों में वे विशेष रूचि रखते थे। वे हमारे बीच में नहीं रहे।

श्री वली मोहम्मद एक बार चौहटन से विधान सभा के सदस्य रहे। आर्थिक, सामाजिक और राजनैतिक उत्थान में हमेशा प्रयत्नशील रहे। वे अपने क्षेत्र की जो क्षेत्रीय समस्याएं थीं उनके समाधान के लिये सदैव इस सदन में उन मुद्दों को उठाते रहे। वे भी हमारे बीच में नहीं रहे।

उपाध्यक्ष महोदय, 9 व 10 जून को जो अरब सागर से भयंकर चक्रवाती तूफान आया उससे गुजरात में कन्फर्म जो डैथ हुई हैं वे 1100 के आस-पास हैं। राजस्थान में इस भीषण चक्रवात का प्रकोप गुजरात के मुकाबले में तो कम रहा लेकिन जन-धन की भारी क्षति दोनों ही राज्यों में हुई है। गुजरात में तो हजारों करोड़ों की क्षति हुई है और कांडला पोर्ट तहस-नहस हो गया। उपाध्यक्ष महोदय, अभी तक हजारों व्यक्ति अज्ञात और लापता है। प्रशासनिक अधिकारी जिनको जालौर और बाड़मेर भेजा था, उन्होंने भी अलग-अलग रिपोर्ट प्रस्तुत की है लेकिन 150 के आस-पास राजस्थान के लोग जो वहां पर काम करते थे, मजदूरी करते थे, वे गरीब लोग अभी तक लापता हैं। यह पढ़ने में आया अखबारों में कि लापता लोगों की लाशें समुद्र में तैरती हुई करांची तक पहुंच गयीं। राजस्थान के जो लोग लापता हैं, अज्ञात हैं, उनके परिवार के लोग ऐसा मानकर चल रहे हैं कि वे इस संसार में रहे ही नहीं हैं, तूफान के कारण मारे गये हैं।

मैं कांग्रेस विधायक दल और अपनी ओर से इन सभी दिवंगत व्यक्तियों को श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं और प्रभु से प्रार्थना करता हूं कि उनकी आत्मा को शांति प्रदान करे और उनके शोक-संतप्त परिवारजन को इस बिछोह को सहन करने की शक्ति प्रदान करे।

श्री फतेह सिंह (नेता, जनता दल) : उपाध्यक्ष महोदय, श्री बिशम्भर नाथ पांडे, पूर्व राज्यपाल, उड़ीसा, श्री होमी जे. एच. तलेयारखान, पूर्व राज्यपाल, सिक्किम, श्री ई. एम. एस. नम्बूदिरीपाद, पूर्व मुख्य-मंत्री, केरल; श्री यदुनाथ सिंह, पूर्व उपाध्यक्ष एवं सदस्य सातवीं, आठवीं एवं नवीं राजस्थान विधान सभा; श्री गोपाल सिंह (खण्डेला) पूर्व सदस्य, राजस्थान विधान सभा; श्री लालूराम बैरवा, पूर्व सदस्य, प्रथम एवं द्वितीय राजस्थान विधान सभा; श्री लाभचन्द जैन, पूर्व सदस्य, चतुर्थ राजस्थान विधान सभा; श्री राधाकृष्ण गोयल, पूर्व सदस्य, राजस्थान विधान सभा; श्री वली मोहम्मद, पूर्व सदस्य, राजस्थान विधान सभा और गुजरात एवं राजस्थान के

(15)

(श्री फतेहसिंह)

कुछ एक क्षेत्रों में गत माह आये चक्रवाती तूफान में मृतक व्यक्तियों के बारे में जो शोक प्रस्ताव सदन के नेता ने सदन में रखा है उसका मैं समर्थन करता हूं।

मैं इस सम्बन्ध में यह कहना चाहूंगा कि जो माननीय सदस्यों का शोक इस सदन में मनाया जा रहा है उनके बारे में सदन के नेता और प्रतिपक्ष के नेता ने सारा विवरण पेश किया है। मैं उनके प्रति अपनी तरफ से, अपने दल की तरफ से श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं और उन सदस्यों के जो परिवार हैं उनको दुःख सहने की शक्ति प्रदान करने के लिए प्रार्थना करता हूं।

गुजरात और राजस्थान में जो लोग इस तूफान से मरे हैं उसमें मैं कहना चाहूंगा कि राजस्थान में तूफान आया उसमें तो लोग मरे और नुकसान हुआ ही है लेकिन साथ में बांसवाड़ा जिले के कुछ लोग वहां पर काम करते थे उसमें एक परिवार के 6 व्यक्ति मरे हैं, जो अंघोक गांव, कुशलगढ़ क्षेत्र के हैं। दूसरे सज्जनगढ़ क्षेत्र में एक परिवार के 3 व्यक्ति और बाकी एक-एक परिवार के 10, कुल 18 व्यक्ति उस तूफान में मरे हैं। उसमें से 3 लाशें यहां पर आयी हैं, बाकी लाशों का कोई पता नहीं लग रहा है। उनको कोई मुआवजा अभी तक मिला नहीं है। मैं उनके प्रति अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए इस सदन में यह कहना चाहूंगा कि उनके बारे में राज्य सरकार जांच कराए तथा और भी लोग उस इलाके के हैं उनका भी सर्वे करा कर, जांच करा कर उन लोगों को मुआवजा दिलाने की व्यवस्था करे।

श्री अमराराम (धोद) : उपाध्यक्ष महोदय, सदन के नेता और मुख्य मंत्री महोदय ने शोकाभिव्यक्ति का जो प्रस्ताव रखा है और जिस पर विचार नेता महोदय ने और प्रतिपक्ष के नेता महोदय ने रखे हैं उनसे सहमति व्यक्त करते हुए अपने आपको मैं शोकाभिव्यक्ति में शामिल करता हूं। उपाध्यक्ष महोदय, मैं समझता हूं, ई. एम. एस नम्बूदिरीपाद केवल केरल के मुख्य मंत्री ही नहीं थे उन्होंने स्वतंत्रता आन्दोलन में अग्रणी रोल अदा किया था। इस देश और केरल प्रदेश के आर्थिक और सामाजिक रूप से शोषित लोगों को एक हथियार के रूप में संगठित करने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका को उन्होंने निभाया। उस संघर्ष में शिक्षा को सबसे बड़ा महत्व देने के कारण आज उन्हीं की प्रेरणा से इस देश का केरल राज्य सम्पूर्ण साक्षरता में अग्रणी रहा है। निश्चित रूप से ई.एम.एस. नम्बूदिरीपाद की एक चर्चा जब से राजनीतिक जीवन में मैं आया हूं सुन रहा हूं कि सरकारी पद पर होते हुए भी वे अपनी पार्टी के कार्य से जब भी कहीं जाते थे तो सरकारी धन का उपयोग नहीं करते थे। पहले मुख्य मंत्री बने, सरकारी कार्य से राजस्थान आये तो पहली बार उनको देखा। उन्होंने सरकारी गाड़ी का उपयोग नहीं, पार्टी के धन का ही उपयोग किया। वे एक ऐसे व्यक्ति थे जिन्होंने ऐसी पदलोलुपता के पीरियड में भी मुख्य मंत्री जैसे पद पर रहते हुए पूरे केरल राज्य को कम्युनिस्ट पार्टी के कहने के बावजूद भी संगठन में काम किया। पूरे देश को अपनी सेवाएं देने के कारण निश्चित रूप से वे प्रेरणा के स्रोत रहे हैं। शुरू से आखिरी सांस तक उनकी लिखने और पढ़ने की अद्वितीय क्षमता थी। इस

(श्री अमराराम)

देश की शोषित और सामाजिक रूप से पीड़ित जनता के लिए और विशेष तौर से जिस तरह की जातीय व्यवस्था है उसका किस तरह से इस शोषणविहीन समाज में हथियार के तौर पर उपयोग करके हम आगे बढ़ सकते हैं उसमें आखरी दम तक उन्होंने अपना योगदान किया है, इसको हम भुला नहीं सकते।

श्री यदुनाथ सिंह जी, पूर्व उपाध्यक्ष और सदन के सदस्य श्री गोपाल सिंह जी खण्डेला जो खण्डेला, सीकर के रहने वाले थे, इस सदन के सदस्य और मंत्री रहे। इसके साथ-साथ, जब से उन्होंने राजनैतिक जीवन में प्रवेश किया, किसानों की चाहे वह सम्पत्ति की सुरक्षा को लेकर जो बहुत बड़ा वातावरण वहां उस क्षेत्र में था, उसके लड़ने का सवाल हो, बेझिझक उसे लेकर आखिरी दम तक किसानों को अपनी मांगों के लिए जागृत करने, संगठित करने और संघर्ष में उतारने के लिए हमेशा प्रेरणा देते रहे। वे हमारे बीच में नहीं रहे हैं।

श्री लालू राम जी बैरवा, श्री लाभचंद बैद, श्री राधाकृष्ण गोयल, श्री वली मोहम्मद एवं गुजरात और राजस्थान में चक्रवाती तूफान में जो जन और धन की क्षति हुई है, उन तमाम को मैं श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं और उम्मीद करता हूं, प्रकृति से प्रार्थना करता हूं कि उनके परिवार को यह दुःख सहन करने की क्षमता प्रदान करे।

श्री शिवनाथ सिंह (गुढ़ा) : उपाध्यक्ष महोदय, सदन के नेता महोदय ने जिन दिवंगत आत्माओं के प्रति शोकाभिव्यक्ति का प्रस्ताव रखा है और अपनी भावनाएं प्रकट की हैं, अपने सभी साथियों की ओर से मैं भी अपने आपको उसमें सम्मिलित करते हुए सभी मृत आत्माओं के प्रति श्रद्धा प्रकट करता हूं और भगवान से प्रार्थना करता हूं कि उनकी आत्माओं को शांति प्रदान करे।

माननीय उपाध्यक्ष महोदय, पिछले कुछ महीनों में प्रकृति ने बहुत-सी महान विभूतियां हमसे छीनी हैं। नम्बूदिरीपाद जिनका जिक्र यहां आया, माननीय उपाध्यक्ष जी, जैसा प्रतिपक्ष के नेता महोदय ने कहा, वे मुख्य मंत्री ही नहीं थे, एक व्यक्ति ही नहीं थे, अपने आप में एक संस्था थे। जिस वक्त वे अपने कार्य की चरम सीमा पर थे, वे राष्ट्रीय ही नहीं, अन्तरराष्ट्रीय ख्याति के व्यक्ति थे। वाम विचारधारा के वे प्रतीक थे, अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर वाम विचारधारा के अन्दर उनकी मान्यता थी। बहुत ही साधारण व्यक्ति थे और जैसा हमारे कम्युनिष्ट भाई ने कहा, मुझे भी उनको देखने का मौका मिला, जब वे पहली बार राजस्थान में आये थे। हवाई जहाज से उतरे, अपने हाथ में एक थैला लेकर चल दिये। बहुत ही सिम्पल, साधारण प्रकृति के व्यक्ति थे। उन्होंने देश को बहुत कुछ दिया। वाम विचारधारा के वे प्रतीक थे और उन्होंने अपना बहुत बड़ा योगदान दिया। उनके देहावसान से राष्ट्र को बहुत क्षति हुई है।

माननीय उपाध्यक्ष जी, इसी सदन के कई साथी हमसे बिछुड़ गये हैं। पूर्व उपाध्यक्ष यदुनाथ सिंह जी बहुत ही मृदु भाषी, मीठे स्वभाव के व्यक्ति थे और हमेशा हंसमुख रहकर ही दूसरों से बात किया करते थे।

(श्री शिवनाथ सिंह)

माननीय उपाध्यक्ष जी, गोपाल सिंह जी खण्डेला, बहुत लम्बा उनके साथ में सम्पर्क रहा। वे गांव के आदमी थे और हमेशा गांव की बात सोचा करते थे। उसके लिए संघर्ष करने में उन्हें कोई हिचकिचाहट नहीं थी। जब तक वे जिये हमेशा संघर्ष करते रहे। गांव के हर क्षेत्र में, गांव की गतिविधियों के हर क्षेत्र में वे अपना योगदान दिया करते थे।

(12.00 बजे)

उपाध्यक्ष महोदय, उड़ीसा के पूर्व राज्यपाल, सिक्किम के पूर्व राज्यपाल और दूसरे हमारे इस विधान सभा के जो माननीय सदस्य हमसे बिछुड़े, हम सबको खेद है।

उपाध्यक्षजी, पिछले महीने अरब सागर में तूफान आया और आज हम कह नहीं सकते कि संख्या कितनी हुई उन दिवंगत आत्माओं की, अंदाजा ही लगाया जा सकता है। राजस्थान के बारे में कहा जा रहा है कि उस क्षेत्र से जुड़े हुए बहुत-से लोग वहां मजदूरी करने गये हुए थे। उनकी लाश नहीं मिली है, उनको जीवित माना जा रहा है लेकिन वे जीवित नहीं हैं। एक महीना हो गया, उसके बाद में भी उनका अता-पता नहीं है। यह बहुत ही दु:खदायी घटना थी। प्रकृति ने देश के साथ बहुत बड़ा खिलवाड़ किया। इस प्राकृतिक आपदा में जो हमारी जन-धन की क्षति हुई है उसका हम सबको दु:ख है, पीड़ा है। मैं इस अवसर पर माननीय मुख्य मंत्रीजी से एक निवेदन जरूर करना चाहूंगा कि राजस्थान के जितने भी लोग-बाग ज्ञात-अज्ञात पीड़ित हुए हैं उन सबका सर्वे करवाया जाय और सर्वे करवाने के बाद में उनके लिये मुआवजे की उचित व्यवस्था की जाए।

उपाध्यक्षजी, इन्हीं शब्दों के साथ मैं इन सभी दिवंगत आत्माओं के प्रति श्रद्धा सुमन अर्पित करते हुए भगवान से प्रार्थना करता हूं कि इनकी आत्माओं को शांति प्रदान करे।

श्री उपाध्यक्ष : माननीय सदस्यगण, उड़ीसा के पूर्व राज्यपाल श्री बिशम्भर नाथ पांडे का जन्म 23 दिसम्बर, 1906 को मध्य प्रदेश के छिंदवाड़ा जिले के उमरेठ कस्बे में हुआ। आपने छिंदवाड़ा के अलावा मद्रास के अडयार तथा पश्चिमी बंगाल के विश्वभारती शांति निकेतन में अध्ययन कर स्नातकोत्तर अनुसंधान की उपाधि प्राप्त की।

अगस्त, 1983 से नवम्बर, 1988 तक उड़ीसा के राज्यपाल के पद पर आसीन रहे। श्री पांडे वर्ष 1976 से 1982 तथा 1988 से 1994 तक राज्य सभा के सदस्य रहे। राज्य सभा के कार्यकाल के दौरान आप वर्ष 1980 में राज्य सभा के उप सभाध्यक्षों के पैनल में रहे। आप विश्वभारती विश्वविद्यालय (संशोधन) विधेयक, 1981-82 से सम्बन्धित संसद के दोनों सदनों की संयुक्त ससदीय समिति के सभापति भी रहे। श्री पांडे वर्ष 1952-53 में उत्तर प्रदेश विधान सभा तथा वर्ष 1972–74 में उत्तर प्रदेश विधान परिषद के सदस्य भी रहे।

देश के स्वाधीनता आन्दोलन से सक्रिय रूप से जुड़े श्री पांडे ने वर्ष 1921 में असहयोग आन्दोलन में भाग लेने के अलावा वर्ष 1921 से 1942 तक सभी सत्याग्रह

(श्री उपाध्यक्ष)

आन्दोलनों में भाग लिया और आठ बार जेल भी गये। आपने 10 वर्ष से अधिक अवधि बंदीगृह में ही व्यतीत की। बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी श्री पांडे वर्ष 1946 से 1987 तक अनेक सामाजिक, राजनैतिक एवं शैक्षणिक संस्थाओं के प्रमुख पदों पर रहे।

विभिन्न क्षेत्रों में आपकी उल्लेखनीय सेवाओं के लिए आपको पद्मश्री से सम्मानित किया गया। श्री पांडे को वर्ष 1992 में सोका विश्वविद्यालय, टोक्यो द्वारा डॉक्टरेट की उपाधि प्रदान करने के अलावा वर्ष 1993 में भारत के राष्ट्रपति द्वारा साम्प्रदायिक सामंजस्य के लिए 'खुदाबख्श' पुरस्कार भी प्रदान किया गया।

साम्प्रदायिक सद्भाव, राष्ट्रीय एकता, इतिहास, पुरातत्व, अनुसंधान तथा लेखन में विशेष रुचि रखने वाले श्री पांडे की हिन्दी-अंग्रेजी की 45 पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं। आपने 'दी स्पिरिट आफ इण्डिया,' 'सेंटिनरी हिस्ट्री ऑफ इंडियन नेशनल कांग्रेस, 1885-1985' सहित अनेक पुस्तकों का सम्पादन भी किया। आपने विश्व के अधिकांश देशों की यात्राएं कीं।

श्री बिशम्भर नाथ पांडे का दिनांक 1 जून, 1998 को निधन हो गया।

सिक्किम के पूर्व राज्यपाल श्री होमी जहांगीर तलेयारखान का जन्म 9 फरवरी, 1927 को बम्बई में हुआ। आपने बी. ए. की उपाधि प्राप्त की।

गांधीवादी विचारधारा के पोषक श्री तलेयारखान एक प्रखर स्वतंत्रता सेनानी थे। आप प्रारम्भ से ही भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस से सम्बद्ध रहे। वर्ष 1948 से 1952 तक आप बम्बई म्युनिसिपल कारपोरेशन के सदस्य रहे। आप वर्ष 1952 से 1972 तक लगातार चार बार महाराष्ट्र विधान सभा के लिए निर्वाचित हुए। वर्ष 1960 से 1967 के मध्य आप महाराष्ट्र सरकार में खाद्य, नागरिक आपूर्ति, स्वास्थ्य, परिवार कल्याण, आवास, मत्स्य, राष्ट्रीय बचत, पर्यटन आदि विभागों के मंत्री रहे। आप मुख्य मंत्री के संसदीय सचिव और मुख्य सचेतक भी कई वर्षों तक रहे।

श्री तलेयारखान वर्ष 1981 से 1984 तक सिक्किम के राज्यपाल के पद पर आसीन रहे। आप वर्ष 1971 से 1977 तक लीबिया तथा वर्ष 1984-85 में इटली में भारत के राजदूत भी रहे। समाज सुधार और पर्यावरण संरक्षण में आपकी गहरी रुचि थी। आप वर्ष 1985 से 1991 तक अल्पसंख्यक आयोग के सदस्य रहे। आपने अनेक बार विदेश गये भारतीय प्रतिनिधि मण्डलों में प्रतिनिधित्व किया। अनेक पुस्तकों के लेखक श्री तलेयारखान को वर्ष 1992 में पद्मश्री से विभूषित किया गया।

वयोवृद्ध स्वतंत्रता सेनानी श्री होमी जे. एच. तलेयारखान का निधन दिनांक 27 जून, 1998 को हो गया।

केरल के पूर्व मुख्य मंत्री श्री ई.एम.एस. नम्बूदिरीपाद का पूरा नाम ईलामकुलम मानक शंकर नम्बूदिरीपाद था। आपका जन्म 14 जून, 1909 को दक्षिण मालाबार (केरल) में बल्लुवानंद तालुक के ईलामकुलम

(श्री उपाध्यक्ष)

गांव में हुआ। आपने शूर के पेरनथेलम्मा हाई स्कूल और सेंट थामस कालेज से शिक्षा प्राप्त की। आपकी बचपन से ही राजनीति में रुचि थी और मात्र 12 साल की उम्र में आपने शूर में हुए पहले अखिल भारतीय राजनीतिक सम्मेलन में भाग लिया था।

देश में चल रहे स्वतंत्रता आन्दोलन से प्रेरित होकर आप वर्ष 1932 में पढ़ाई छोड़कर "सविनय अवज्ञा" आन्दोलन में शामिल हो गये। आपको 'नमक सत्याग्रह' में भाग लेने पर जेल भेजा गया। वर्ष 1934 में आप कांग्रेस में शामिल हो गये और शीघ्र ही आप केरल प्रांतीय कांग्रेस कमेटी के महासचिव बनाये गये। वर्ष 1934 में कांग्रेस सोशलिस्ट पार्टी के गठन में आपकी महत्वपूर्ण भूमिका रही। आपको अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी का सदस्य भी नियुक्त किया गया। वर्ष 1939-40 में आप मद्रास विधान सभा के सदस्य रहे।

आपने मार्क्सवाद का गम्भीरता से अध्ययन किया और उससे प्रभावित होकर केरल में कम्युनिस्ट पार्टी की स्थापना की। प्रखर बौद्धिक क्षमता और सक्रियता के कारण जल्द ही कम्युनिस्ट आन्दोलन में आपकी छवि एक राष्ट्रीय नेता के रूप में उभरी और आप पार्टी की केन्द्रीय समिति के सदस्य बनाये गये।

वर्ष 1957 के आम चुनावों के बाद केरल में भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी की साझा सरकार बनी और श्री नम्बूदिरीपाद इसके नेता चुने गये। आपको संसदीय लोकतन्त्र के तहत निर्वाचित पहली कम्युनिस्ट सरकार का मुख्य मंत्री बनने का गौरव प्राप्त हुआ। मुख्य मंत्री के रूप में आपने व्यापक भूमि और समाज सुधार सम्बन्धी कार्य किये लेकिन जुलाई, 1959 में आपकी सरकार बर्खास्त कर दी गयी।

वर्ष 1964 में कम्युनिस्ट पार्टी का विभाजन हो गया और श्री नम्बूदिरीपाद मार्क्सवादी कम्युनिस्ट पार्टी के महासचिव बनाये गये। वर्ष 1967 में मार्क्सवादी कम्युनिस्ट पार्टी ने दूसरे दलों के साथ मिल कर केरल में दुबारा सरकार बनाई तथा श्री नम्बूदिरीपाद पुनः मुख्य मंत्री बनाये गये और वर्ष 1969 तक इस पद पर आसीन रहे।

वामपंथ के भीष्म पितामह कहे जाने वाले श्री नम्बूदिरीपाद विद्वान लेखक और प्रखर पत्रकार भी थे। आप हिन्दी, अंग्रेजी, मलयालम, संस्कृत और उर्दू, भाषा के अच्छे जानकार थे। आपने हिन्दी, अंग्रेजी और मलयालम में अनेक पुस्तकें लिखीं। कई पत्र-पत्रिकाओं का सम्पादन करने के अलावा आप मार्क्सवादी कम्युनिस्ट पार्टी के मुख-पत्र "देशाभिमान" में विचारोत्तेजक लेख भी लिखते रहे।

वयोवृद्ध वामपंथी नेता श्री ई.एम.एस. नम्बूदिरीपाद का दिनांक 19 मार्च, 1998 को निधन हो गया।

राजस्थान विधान सभा के पूर्व उपाध्यक्ष श्री यदुनाथ सिंह का जन्म 15 जून, 1944 को भरतपुर जिले के कासगंज गांव में हुआ। आपने द्वितीय वर्ष (टी. डी. सी) तक शिक्षा प्राप्त की।

(श्री उपाध्यक्ष)

आप वर्ष 1980 से 1992 तक सातवीं आठवीं तथा नौवीं राजस्थान विधान सभा में भरतपुर जिले के नदबई क्षेत्र से विधायक रहे। श्री यदुनाथ सिंह 5 जुलाई, 1990 से 21 मार्च, 1991 तक राजस्थान विधान सभा के उपाध्यक्ष के पद पर आसीन रहे। बाद में आप गृह समिति व प्रश्न एवं संदर्भ समिति के सदस्य भी रहे। सातवीं विधान सभा के कार्यकाल में आप राजस्थान विधान सभा की सरकारी आश्वासनों सम्बन्धी समिति, राजकीय उपक्रम समिति तथा पुस्तकालय समिति के सदस्य रहे। वर्ष 1982–85 में आप यातायात, आवासन, रोजगार एवं प्राथमिक शिक्षा विभागों की परामर्शदात्री समिति के सदस्य भी रहे। आठवीं विधान सभा के कार्यकाल में आप अधीनस्थ विधान सम्बन्धी समिति व प्राक्कलन समिति "ख" के सदस्य रहे तथा वर्ष 1988–90 में जनता दल के सचेतक रहे।

किसानों के प्रबल हितैषी श्री यदुनाथ सिंह अन्तरराज्यीय नदी-जल बंटवारे को लेकर राज्य के हितों के प्रति सतत् संघर्षशील रहे। आप आफिसर्स क्लब, भरतपुर के आजीवन सदस्य रहने के साथ-साथ राजस्थान वन्य जीव सलाहकार मण्डल तथा प्रदूषण नियंत्रण मण्डल, जयपुर के सदस्य भी रहे। सार्वजनिक जीवन में जन-साधारण में आर्थिक, सामाजिक एवं राजनीतिक चेतना जागृत करने के लिए आप सदैव प्रयत्नशील रहे।

श्री यदुनाथ सिंह का निधन दिनांक 7 अप्रेल, 1998 को हो गया।

राज्य सरकार के पूर्व मंत्री श्री गोपाल सिंह खण्डेला का जन्म 2 अक्टूबर, 1933 को सीकर जिले की श्रीमाधोपुर तहसील के पीपल्या ग्राम में हुआ। किसान परिवार में जन्मे श्री गोपाल सिंह ने विधि स्नातक तक शिक्षा प्राप्त की। छात्र जीवन से ही आप सामाजिक कुप्रथाओं व किसानों की समस्याओं को लेकर संघर्षरत रहे।

श्री गोपाल सिंह खण्डेला तीन बार राजस्थान विधान सभा में विधायक रहे। पांचवीं विधान सभा के लिए आप वर्ष 1972 में खण्डेला निर्वाचन क्षेत्र से निर्दलीय विधायक चुने गये। छठी विधान सभा के लिए आप वर्ष 1977 में जनता पार्टी के प्रत्याशी के रूप में चुने गये तथा नौवीं विधान सभा (वर्ष 1990-92) में जनता दल के विधायक रहे। आप 30 मई,1990 से 26 अक्टूबर, 1990 तक राजस्थान सरकार में दुग्ध विकास, मुद्रण व लेखन सामग्री विभाग के स्वतंत्र प्रभार के राज्य मंत्री रहे तथा 1 जून,1990 से 26 अक्टूबर, 1990 तक आयोजना (जन-शक्ति), आर्थिक एवं सांख्यिकी विभाग के राज्य मंत्री रहे। मंत्री पद से त्याग-पत्र देने के बाद वर्ष 1990-91 में आप प्राक्कलन समिति "ख" के सभापति रहे।

आप वर्ष 1964 से 1972 तक पंचायत समिति खण्डेला के प्रधान रहे। राजस्थान किसान यूनियन के महामंत्री पद पर रहते हुए आप किसानों में जागृति उत्पन्न करने एवं उनकी समस्याओं के समाधान हेतु सक्रिय रहे। कृषि विकास में विशेष रुचि रखने वाले श्री खण्डेला ने गेहूं के उन्नत बीज का उत्पादन कर राज्य स्तरीय प्रतिस्पर्धा

(श्री उपाध्यक्ष)

में प्रथम स्थान प्राप्त किया। आप अनेक शैक्षिक, सामाजिक एवं राजनीतिक संस्थाओं से सम्बद्ध रह कर उनके विभिन्न पदों पर रहे।

श्री गोपाल सिंह खण्डेला का दिनांक 24 मार्च, 1998 को निधन हो गया।

पूर्व विधायक श्री लालूराम बैरवा का जन्म 1 जनवरी, 1925 को टोंक में हुआ। आपने दरबार हाई स्कूल, टोंक से मैट्रिक तक शिक्षा प्राप्त की।

आप वर्ष 1952 से 1962 तक पहली तथा दूसरी राजस्थान विधान सभा में टोंक निर्वाचन क्षेत्र से विधायक रहे। श्री बैरवा विधान सभा के कार्यकाल में अपने क्षेत्र के विकास के लिए निरन्तर प्रयत्नशील रहे। पिछड़ी जातियों व दलित वर्ग के उत्थान के लिए सदा सक्रिय रहे। श्री बैरवा की सामाजिक कल्याण से सम्बन्धित कार्यों में विशेष रुचि रही। आप कांग्रेस कमेटी के सदस्य तथा दलित वर्ग संघ, टोंक के मंत्री भी रहे।

श्री लालूराम बैरवा का निधन 21 मार्च, 1998 को हो गया।

पूर्व विधायक श्री लाभचन्द बैद का जन्म आश्विन कृष्ण द्वितीया, विक्रम संवत् 1969 को चूरू जिले के रतनगढ़ कस्बे में हुआ। आपने शिक्षा में भूषण की उपाधि प्राप्त की।

श्री लाभचन्द बैद चौथी राजस्थान विधान सभा (1967-72) में सुजानगढ़ क्षेत्र से जनसंघ के विधायक रहे। आप 15 साल जनसंघ के सदस्य रहे तथा तीन वर्ष तक चूरू जिला जनसंघ के अध्यक्ष रहे।

समाज सेवा में विशेष रुचि रखने वाले श्री बैद की छवि एक ईमानदार व निष्ठावान सदस्य के रूप में रही। आप गरीब किसानों व शोषित वर्ग के हितों की रक्षा के लिए सदैव तत्पर रहते थे। लगभग 25 वर्ष तक नगरपालिका के सदस्य रहते हुए आपने अपने क्षेत्र के लोगों की समस्याओं के समाधान के लिए निरन्तर प्रयत्न किये।

श्री लाभचन्द बैद का निधन दिनांक 4 अप्रेल, 1998 को हो गया।

पूर्व विधायक श्री राधाकृष्ण गोयल का जन्म वर्ष 1928 में सवाईमाधोपुर में हुआ। आपने एम. ए., एलएल बी. की उपाधियां प्राप्त कीं।

श्री राधाकृष्ण गोयल तृतीय राजस्थान विधान सभा (1962-67) के लिए टोंक से स्वतंत्र पार्टी के विधायक निर्वाचित हुए। आप जयपुर की राज्य प्रजा मण्डल की कार्यकारिणी के सदस्य रहे। आप प्रांतीय स्वतंत्र पार्टी व प्रांतीय कांग्रेस कमेटी के भी सदस्य रहे। आप टोंक, नगरपालिका के सदस्य व जिला सहकारी संगठन, टोंक के चेयरमैन भी रहे।

सामाजिक एवं धार्मिक कार्यों में विशेष अभिरुचि रखने वाले श्री राधाकृष्ण गोयल का दिनांक 31 मई, 1998 को निधन हो गया।

पूर्व विधायक श्री वली मोहम्मद द्वितीय राजस्थान विधान सभा (1957-62) में बाड़मेर जिले के चौहटन निर्वाचन क्षेत्र से

(श्री उपाध्यक्ष)

कांग्रेस पार्टी के विधायक रहे। जन-साधारण में आर्थिक, सामाजिक एवं राजनीतिक चेतना जागृत करने के लिए सतत् प्रयत्नशील रहे। श्री वली मोहम्मद विधान सभा में भी पिछड़े वर्ग के उत्थान तथा अपने क्षेत्र की समस्याओं हेतु सदैव सक्रिय रहे।

श्री वली मोहम्मद का निधन दिनांक 3 मई, 1998 को हो गया।

दिनांक 9–10 जून, 1998 को अरब सागर में आये भीषण चक्रवाती तूफान ने गुजरात और पश्चिमी राजस्थान में भयंकर तबाही मचाई जिससे बड़ी तादाद में जान-माल की क्षति हुई है। गुजरात के तटवर्ती क्षेत्र में विध्वंस के बाद इस तूफान ने राजस्थान में बाड़मेर और जालोर जिले में भी काफी नुकसान पहुंचाया है। प्रकृति के इस प्रचंड प्रकोप से हजारों घरों के चिराग असमय ही बुझ गये। इस हादसे से जहां अरबों का नुकसान हुआ वहीं बड़ी संख्या में लोग मारे गये और बहुत-से बेघर हो गये।

मैं सभी दिवंगत व्यक्तियों को अपनी ओर से तथा इस सदन के सभी माननीय सदस्यों की ओर से श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं। मैं ईश्वर से प्रार्थना करता हूं कि उनकी आत्मा को शांति प्रदान करे और उनके शोक-संतप्त परिजनों को उनका बिछोह सहन करने की शक्ति दे।

माननीय सदस्यों से निवेदन है कि वे दो मिनट के लिए दिवंगत आत्माओं को मौन शांति दें।

(तदनन्तर सदन ने दो मिनट मौन खड़े रह कर दिवंगत आत्माओं को श्रद्धांजलि अर्पित की)

सदन की बैठक 9 जुलाई, 1998 को 12.00 बजे तक के लिए स्थगित की जाती है।

(तदनन्तर सदन की बैठक 12.18 बजे गुरुवार, 9 जुलाई, 1998 के 12.00 बजे तक के लिए स्थगित हुई)